

Mss. : Geeta Govinda Shree Tika (Gujrati) B

N
a
v

V
i
l
a
s

2023

हेसिखिसांभल॥ हेराधानूमखचिंतनकरूं॥ केहवृंछेतेराधानूमस॥ मेंजेअ
पराधकीधोछेतेणेमुजऊपरवणोंकोपकरीनेकुटिलवाकोभ्रजेभकुटीराधानीते
जाणियेओणपयजेरातंकमलतेऊपरआकुलव्याकुलभ्रमरभमतोनहोयशूं॥
कोधेकरीनेमुखरातथयूछेतेरातंकमलतेऊपररामभकुटीकोधेकरनेकुटिलवा
कीतेभ्रमरछे॥ ३॥ हेसखितंमुझेबुद्धिकेहे॥ हेजेराधानूंअतिस्मरणकरूं॥ तेलेह

चिंतयामितदाननंकुटिलभुकोपभरेण॥ ओणपयमिवोपरिभ्रमता
कुलंभ्रमरेण॥ हरिहरि॥ ३॥ तामहं हृदिसंगतामनिशंभुशंरमयामि॥ हरिहरि॥
किंवनेनुसरामितामिहकिंवथाविलपामि॥ हरिहरि॥ ४॥ तच्चिखि
न्नमसूययाहृदयंतवाकलयामि॥ तन्नेवेधिकुतोगतासिनतेनतेनुनया

दयमाहेमलजेराधातेशूरमूछूं॥ हवेराधानेंजोवावनमांहेजाऊशूं॥ हेफोकटआ
हाविलापकरूं॥ तेसूं॥ माहरोएविलापकोणजाणो॥ जोराधामुझेविलापकरतो
जाणेंतोकरवानदे॥ तेपापेंअरण्यरुदितनापेंरंकरूं॥ २॥ वलीआरुसविलापकर
छे॥ हेराधेजाणूं॥ हेजेताहृदयअनसूयाजेकोधतेलेकरनेखितयइरयूछेइ
खपासूं॥ हेतेमोटेतुजनेनयांमनावतो॥ जाणतोनथाजेरासावीनवोहाजइवेतोछे॥

Brihanmandiradhiswar Deshikendra
Shrimad Gokulnathji Maharaj
(Mumbai)

जेजाणेंतोसाहआवीनेमनावो॥

॥ गीतगो ॥

॥ २५ ॥ श्रीकृष्णविरहव्याकुलथकाराधाने ज्यमदेखता होय तम केहे छे । हे प्रिये तम मन मां
बाहर सघले दी से छे । मज आग लथी आवे छे अने जाय छे । पण पेहेलां मुझे देखी
ने हरषीने आवीने आलिंगन देती हूती तम हवें शो नथी देती ॥ ६ ॥ हे प्रिये राधे । कृष्ण
कस्य । एमा हरो अपराध एक बार खम । हवें कृष्ण रां अपराध नहिं करूं । हे सुंदरि ह

दृश्यसे पुर तो गतागत मेव मे विदधासि ॥ किं पुरे वस मंभ्रमं परि
रंजणं न ददासि ॥ हरि हरि ॥ ६ ॥ कृष्ण ताम परं कदा पित वेद शो न क
रोमि ॥ दिहि सुंदरि दर्शनं मम मन्यथे न दुनोमि ॥ हरि हरि ॥ ७ ॥

वें कृष्ण करीने मुझे दर्शन दे । कृष्ण दर्पनें तीक्ष्ण बाएँ करीने पाडा घणा पामूं छे ।
ते मज ऊपर स एटली दया शो नथाथाती । महामोटा जे सज्जन महानुभाव छे ते पार
का पाडा टाले छे । आपणें धनें प्राणे करीने पार कुंदुःख टाले छे । तो हूँ तज माटे कं दर्पे
पाडा ऊछे । अने तुझे मज ऊपर करुणा क्यम नथी ऊपजती ॥ ७ ॥

श्रीरामः ॥

॥ २५ ॥

हरि नारायण ने प्राणा जे एं पेर भजे कामे अथवा स्नेहें अथवा क्रोधें अथवा भक्ति भावें भजे तो समस्त पाप हरे तथा भक्ति आपे ते माटे हरिः ते हरि नं ए चरित्र श्री जय देव कवी श्वरें वरुं ते सर्व थको उत्कृष्ट वर्तें छे जय देव के हवो छे परमेश्वर ने विषे प्रवीण छे नम्र छे पला के हवो छे किंडु बिल्व ए हवे नामे नगर

वर्षितं जय देव के न हरे रिदं प्रणतेन किंडु बिल्व समुद्र संभव
रोहिणी रमणेन हरि हरि ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ ॥ ॥

तेरूपियो समुद्र ता हां ऊप नों छे जा एं रोहिणी रमण चंद्र मानो ह्यश्च जय मचंद्र
मानी उत्पत्ति समुद्र ही जय देव ने चंद्र मानी उपमा जय मचंद्र मा अमृता वीस त
वर्जन ने आकाश करे तम जय देवें सर्व जन ने आनें दऊप जायें छे अनेंगा
मनें पण मोदु मकही समुद्र तुल्य कहें अनें आपण मोदु मचंद्र मोतुल्यता ॥

॥ २६ ॥

गीतमाह्वला अर्थ केहे छे ॥ हे अनंग अरे कंदर्प प्रिया जे राधा ते साथे वियोगने
 म्यो जे हूँ ते मुझें प्रहार मकर ॥ मरी को प्यो थको मज पूरें कां धाय के ॥ ईश्वर महा दे
 वनां भ्रांतिये मधाई रा ॥ हूँ ईश्वर न हौं ॥ तूं जा एं छे ईश्वर माझे वेरी एडें मारुं ते
 कोई मन माहे भ्रम जाण्यमा ॥ माझा हृदने विषे नीलां कमल नों हार के ॥ रखे तूं

हृदि विशालता हारो नायं भुजंग मनायकः कुवलयदलश्रेणी
 कंठेन सागर लघुतिः ॥ मलयजरजोने दंभस्म प्रियारहिते म
 यि प्रहरन हर भ्रांत्पा नंग कुधा किं सुधा वसि ॥ १ ॥ ॥ ॥

जा एतो जे कोटें सर्प धाल्यो छे ए सपनो ह्य ॥ अनेंगले विष नो ह्य एनी लां कमल
 नां पत्रनी श्रेणी छे ॥ अनें शरीरने विषे मलय जजे बावना चंदन ते चो पडूं छे ॥ आयमः
 रखे तूं जां एतो जे ए भस्म चो ला छे ॥ १ ॥

॥ २६ ॥

वलाश्राकृष्णकेहेछे॥ हेकंदर्पआंवानां मोररूपियूं बाण हाथनें विषें मलईश
अनें जो कदाचित लइश तो धनुष माहे सोध तो रये॥ तूं कीडा मात्रें विश्वनें जाते
छे तो मूर्छित जन जे हें ते मुकूं मारतां तादरे हाथशूं आपणे अनें शृंग पुरुषार्थ
शे॥ अनें हे कंदर्प माहूं जे मन मृगादी मृगा हरिणा सरखा मोटा चंचल नेत्र छे जे

पाणो माकुर चूत सायक ममुं माचाप माये पय काडानि छित वि
श्व मूर्छित जना धातेन किं पौरुषं॥ तस्या एव मृगादृशो मनसि ज
प्रेखत्कदाक्षो भुगश्रेणी जर्जरितं मनागपि मनोनाद्यापि संधूयते॥२॥

झाते राधानां कंदर्पें करी चंचल जे नेत्रनां कदाहते रूपियां ताका जे बाण ते ह
नां जे श्रेणी समूह ते एं करी नेत्र जर्जरीयूं छे माहूं मन ते दृज लंगार संधूय
तूं नया खस्य नद्यायातं॥ एहाने मारी नेत्रें काई प्रतिष्ठान हि होय॥ मोटा शूर
माहे तडें माही लाज हो॥२॥

॥ २९ ॥ हवें राधानें श्री कृष्ण के हे छे हे राधे तन्निता झी भूक हिये भूकुटी ते रूपिया धनुष
 नें विषें साधूं जे कटाक्ष दृष्टि रूपिया बाण ते माझा मर्म स्थान कर्ने विषें व्यथा दुः
 ख द्यो ॥ एष्टूं अपूर्व तथा ताझो एकुटिल वांको तथा श्याम काले जे कबरी भार के
 शपाश ते पण मुकें मारवानों उद्यम करो ॥ अथवा मार कहिये कंदर्प ऊपजावो त

भूचापे निहितः कटाक्ष विशिखे निर्मातु मर्म व्यथां श्यामात्मा कुटि
 लः करोतु कयेतु कबरी भारेऽपि मारोद्यमं ॥ मोहं तावदयंच तच्चि
 तनुतां विंबाधरो रागवान्सहृत्स्तनमंडलस्तव कथं प्राणैर्मम
 कीडति ॥ ३॥

था ताझो ए बिबाध रोग वानरा तो छे ते पण मोह ऊपजावो
 ताझा उष्ट संभारता मोह ऊपजे छे ते ऊपजो ॥ पण सहृत् रुद्रुत्त कहिये वृत्तिल वाट श्रीरामः
 लूं जे स्तन मंडल ते माझा प्राण संघाथें कां कीडा करे छे ॥ जे भलो होय छे रुद्रा आचारवं ॥ ३९ ॥
 त ते रुने वरां सो पडे तो कोहनें कहिये ॥ ए स्तन मंडल संभारतां माझा प्राण जाय छे ॥ ३॥

श्रीकृष्ण आपण मन नों अभिप्राय के हेछे ॥ हेराधे ॥ हूं माझ मन मां हे ते ताझ स्प
रीथ कां जे सुख ऊपनां ते संभारूं छूं ॥ अनें ताझ ते दृष्टि नां विलास मनोहर जो वां
ते पण संभारूं छूं ॥ तथा ताझ मुख नों ते परिमल महासुगंध चुंबन करतां आव
तू जे हित ते संभारूं छूं ॥ अनें ताझ अमृत आवी वको किंसे हवचन रहस्प नें सु

तानि स्परी सुखानि ते चतरलाः सिग्धादृशो विभ्रमास्त्वदक्रां बु
जसौ रभंचव सुधास्पंदी गिरां वकिमा ॥ साविं बाधरमाधुराति वि
षया संगेऽपि चेन्मानसं तस्यां लग्न समाधि हंत विरह व्याधिः कथं
वर्तते ॥ ४ ॥

खकारा अनें ताहरा ते बिंबोष्टना माधुरी मधुरता जे में ज
आस्वादन का धूंछे ते हनो रस हूं जाणूं ते संभारूं छूं ॥ एणापे रं जो माहरूं मन ताह
रे विषे ज संलग्न थई रहूंछे ॥ एटलां वानां क्षण बेसाड तो नथा तोय पण हंत से दें क
नें के हेछे ॥ विरह रूपि यो व्याधिक्य मह जाछां डतो नथा ॥ एअ पूर्व वार्ती दी से छे ॥ ४ ॥

॥ गीतगो ॥

॥ २७ ॥ श्रीकृष्णकेहेछेहेसखि। स्मर कहियेकंदर्पतेरोराधानें एटलां अख कहियेवा
 एरूपियांपशु आपणं आयुधराधानें विषे मूकां छे जेणे आयुधें करी नें जगतजी
 तूं छे। एटलेते आयुध सफल कहां। लोक मां हे एह वूं छे जे आपणें रूडी वस्तु हो
 यते देवतानें आधीन काजे। तो एराधा केहवा छे। अनंग कंदर्पजी तो छे। तेमा

भूपल्लवंधनुरपांगतरंगितानि बाणाः गुणः श्रवणपालिरिति
 स्मरेण ॥ तस्मात्तनूजयजंगमदेवतायामस्वाणि निज्जितजगं
 तिकिमर्षितानि ॥ ५ ॥ इति श्रीगीतगोविंदे कविश्रीजयदेवकृतौ
 मुग्धमधुसूदनो नाम तृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥

देजंगमदेवताचालतादेव
 ता। कीयांतेअख। हं एमजाणू छें। एराधानां भृकुटीरूपियूं कंदर्पनूधनुषछे श्रीरामः
 अनेकदाक्षतेकंदर्पनां बाणछे। तथाकाननीपालीजेलालीतें गुणप्रसेंचा कंद
 र्पनां। एहवां आयुध सघलां राधानें आप्यां छे। एसर्गनें विषे मुग्धमधुसूदन ॥ २७ ॥
 विवेकश्म्यगाधवकथा ॥ ५ ॥ इति श्रीटीकामां सर्गजी जो ॥

आगल्पागीतनों अर्थ श्लोकें करीने के हैं। श्री कृष्ण के हवा छे। यमुना नें तारे
कांवे वेड सदृश नागुदय डर घां छे जाल सरखां ते माहें मंद कहिये निरुघम
प्रेमने जे भूर समूह ते एं उद्गां ते कहिये विद्वज छे ए हवा जे माधव ते हने राधा
नां सरवी के हैं छे ॥ १ ॥ ए गीतनों कर्णी टकरा ग छे ते हनं रूप ॥ श्लोकः ॥ कृपा ए

यमुना तीर वानीर निकुं जे मंद मा स्थितं ॥ प्राहये
मभरोद्गा तं माधवं राधिका सरवी ॥ १ ॥ श्री कृष्णः ॥

पाणिर्गजदंतपत्रे मेकं वहन् दक्षिण कर्ण पूरे ॥ संस्तुयमानः सुरचारणौघैः
कर्णी टकरागः श्रितिकं वरागः ॥ १ ॥ अर्थः ॥ कर्णी टकराग के हवा छे। खड्ग छे हा
थने विषे जे हने। वली जमणा कर्णने विषे हस्ता नां दंत पत्रने वेहे तो छे। वली देव वा
रणने समूह सुति करे छे जे हना। वली मयूर नां कंठ सरखो नीलो छे कर्णी टकराग ॥ १ ॥

हे श्री कृष्ण ते राधा वली शंकरे छे। आपणां हृदयने विषे उदक बिंदु सहित नलिनी जे
कमलिनी तेहनां दल पारखी योनां जाल समूह तेहनें सनाह बखतर पेहेरे छे। ज्याहां
ज्याहां मर्म स्थान कछे त्याहां त्याहां लगाडे छे। कोट्ठे भये। अविरल घणानि पतित साह
मां आवतां जे कंदर्पनां बाण ते झां जय थी बीहनी थकी। राधा जाले छेरखे तेहनें कंद
र्पनां बाल वागतां। विरहें पाडी संताप शमवानें पाणियें नीज बीनें कमल पत्र संवर्गें म

अविरल निपतित मदन शरा विभव दवनाय विशालं। स्वहृदय म
र्म एव मर्म करोति सजल नलिनी दल जालं। सा विरहे॥२॥ कुसुम वि
शिख शर तल्प मन लय विलास कला कमनीयं। द्रुत भिवत वपरि रंभ
सुखाय करोति कुसुम शयनीयं। सा विरहे॥३॥ मर्म स्थान कनें विषे संवर्गें अ
डाडे छे ए जाव॥२॥ हे श्री कृष्ण वली ते राधा तसारे हे शंकरे छे। कुसुम जे पुष्प तेहनां राया
काडा करवाने अर्थ करे छे। तो जाणिये कुसुम जे फूल ते छे बाण जेहनां एह वोजे कंदर्प
ते कंदर्पने बाणें करीनें राया पाथर तीनो छे। ए बाणें नी राया उपर सूईनें के विणवत
करीश। श्री कृष्ण नृ आलिंगन रूपि यू फल पामवाने। जे राया अनेक विलास संभोग नी कला

ते विषे बांछिये ते राया बाणनी करे छे॥३॥

॥ ३० ॥

हे श्री कृष्ण तेरा धा आहवूं मुख कमल उदार कहिये सुंदर धरे छे ॥ केहवूं छे तेरा धा
नूं मुख कमल ॥ गलतां जेने तरे रूपिया मेघने धरे छे ॥ ज्यम मेघ महा वृष्टिने करे तमग
धानां नेत्र आसूनी धारा निरंतर मूके छे ॥ जाणियें एरा धा चूं मुख नो छे ए चंड मो होय
चंड मा केहवो ॥ विकट कहिये विकाल जे विधुं तुदरा कुते के दंते करी न दलन जे च
र्वण ते एंगल ती छे अमृत नी धारा जे थी एहवा चंड मानो ह्यसूं ॥ ४ ॥ हे श्री कृष्ण तेरा धा

वहति च गलित विलोचन जल धरमानन कमल मुहारं ॥ विधुमिव
विकट विधुं तुद दंत दलन गलिता मृतधारं ॥ सा विरहे ॥ ४ ॥ विलिख
तिरहसि कुरंग मदे न भवंत म समशर भूतं ॥ प्रणमति मकर मधोधि
निधाय कर च शरं न वचूतं ॥ सा विरहे ॥ ५ ॥

कुरंग मद कहिये कस्तूरी ते एं क
शनें असमशर जे कंदर्प ते सरखा सुंदर त हनें एकांतनें विषे आलेखे ॥ कप म आलेखे
छे ॥ हे ठे मकर आलेखीनें ऊपर त हनें आलेखे छे ॥ अनें हाथनें विषे त काल विकसनें
आं बां नूं पुष्प मोर ते आलेखे छे ॥ एणो पुरे त हनें आलेखीने पछे बीही तीथ की प्रणाम
मकरे छे ॥ पग लागे छे ॥ जा एं छे एकंदर्प मुके भवे मारे एह दो नय पामीने न मरकार करे छे त

विंद
हे श्री कृष्ण महा रागो मप्रप्राध छे जे ते छे
आवने मो एकली छे डीने वगल थर छे ॥ ५ ॥
श्री रामः
॥ ३० ॥

हे माधवलक्ष्मीकांत॥ ति राधा प्रतिपद के हे तां ह ए ह ए प्रत्ये ए ह वृ के हे हे शृ के हे
छे॥ हं ता ह्ने पा गें प डी तूं स न्मुरव था कृ पा क र ॥ ते मु ज थ के वि मु ख थ ये मु धा जे अ म्
त ते ह नो नि धि नं डार जे चं द मा ते प ए मा झा शरी र ने द हे छे ॥ ए ह वूं वि प री त्प स र्व था
य छे ॥ ६ ॥ श्री कृष्ण वली ते रा धा त ह्मा सूं अ त्ये त जे ध्या न ते ह नो ल य प्र स ह्ने ते एं करी
ने ॥ अ त्यं त दुः प्रा प घ एं दुः खे करी ने प ए मे दे कृ धी यो ये प ए न प मा र्ज न प्र त द्वा उ ते त

प्रतिपद मिदमिति निगदति माधवतवचरणे पतिता हं॥ त्वयि विमु
खे मयि सपदि मुधानि धिरपितनु ते तनु दा हं ॥ सा विरहे ॥ ६ ॥ ध्या न
लये न पुनः परिकल्पा न वे त म ती व डु रा पं ॥ विलिखति ह सति विषाद
तिरोदिति रोदिति च चति मुंचति तापं ॥ सा विरहे ॥ ७ ॥

हारी क ल्प ना करी ने म
न ने वि षे ध्या ने प्र त द्वा करी ने ल जु आ ई ने पा ग ने अं गू वे करी ने प्रो य ने ख ए छे ल खे छे
अथ वा विल पति विला प ने करे छे ॥ उ लं भा दे छे ॥ त ह्मा म ना व वा ने ह से छे ॥ री मा म्मा
भ र्ता र ने स्त्रि यो नां म ना व वा ना प्र का र छे ते ले अ नु क र ए करे छे ॥ व लो खे द जे दुः ख ते
ह ने पा मे छे ॥ त था रो द न करे छे ॥ व ली आ प ए पे नि दे छे ॥ व ली ता प जे सं ता प ते ह ने मू के छे ॥ ७ ॥

॥३१॥

समस्तलोकनें उद्देश के हेछे ॥ हे वै सवो एश्रा जय देवनूं का धूं जे गात ते दे जे स
नने विषे अधिक नृत्य करवाना इच्छा होय तो अधिक वारे वारे भए वूं ॥ कहवूछे
ए ॥ हरि श्री कृष्ण ने विरहे करी नें आकुल पाडित जे वल्लव युवती गोपी राधा ते दू जे स
स्वाते हनूं वचन ज श्री कृष्ण ने कंघूं ते दूं ॥ भए वूं गा वूं ॥ ७ ॥ हरि श्री कृष्ण ते राधाने आवास
कहिये की डा करवाने अर्थ जे घर ते वने सरखूं मही बाहाम एं लागे ॥ अने प्रिय स
खी जे राधा ते दू जे माला पुष्प नीते पण ते दे ज्वाला लाय छे ॥ अने ते राधाने श्वा सो छी स

श्री जय देव भणित मिर मधिकं यदि मनसानटनीयं ॥ हरि विरहाकुल व
ल्लव युवति सरखी वचनं पवनीयं ॥ ७ ॥ आवासो विपिनाय ते प्रिय सखी
माला पि ज्वालाय ते श्वा सोऽपि श्वसिते न दावदहन ज्वाला कलापय ते
सा पित्व दिरहे एहं त हरिण रूपाय ते हा कथं कंदर्पोऽपि यमाय ते वि
रचये श्वा हूलै विक्रीडितं ॥ १ ॥ इति श्री गीतगोविंदे कवि श्री जय देव क
हरिवल्लभ अशोक पल्लव नामाष्टमः प्रबंधः ॥ ७ ॥ जे ते पण दावा क्रियाय के

दाव जे वन ते दू नो जे दहन अग्नि ते दू जे ज्वाला ते दू नो जे कलाप समूह जालाय छे ॥ वल
ते राधा ते सरखे विरहे करी नें जे मुहरिण आपणाय छे यकी वहु दीवा के ते य दू ने एक लोपा
उपका हरिण सरखी दा से छे ॥ ते ए विलापें ए पोपी जे कंदर्प ते जम सरखी याय शूकर
तोय की वन मोह शाईल जे बाघ ते जम रिण ने मोर कानी चे छे कर ते हवूं चे छित कर तोय की
छे २

इल विक्रीडितं ॥ १ ॥ श्रीरामः ॥ ३१ ॥

एगी तनों देशाखराग छे ॥ तेहनूं रूप के हे छे ॥ श्लोकः ॥ आस्फोटनाविः कृतरोमहर्षीनि
 युद्धसंनद्धविशालबाहुः ॥ प्रांशुः प्रचंडघृतिरिंदुरागो देशाखरागः किलमल्लमूर्तिः ॥
 अर्थः ॥ देशाखराग आहवो छे ॥ बाहुनूं आस्फोटनजेवजाउवूं ते एं प्रकटथयो छे रोमहर्ष
 ऊकाटोजेहने ॥ वलीयुद्धनें अर्थसज्जतसरविशालमोटाबाहुजेहना ॥ वलीप्रांशुऊचो
 छे ॥ वलीप्रचंडघृतिभयंकररूपछे ॥ वलीचंडमासरखेगेरोपूटजेछे ॥ मल्लसरसूसरूपछे ॥

देशाखरागे ॥ एकतालीताले ॥ स्तनविनिहितमपिहारमुदारं ॥ सामनुते
 कृशतनुरतिभारं ॥ ध्रुवपदं ॥ राधिकाविरहे तव केशव ॥ १ ॥ सरसम
 सृणमपिमलयजपंकं ॥ पश्यतिविषमिववपुषिसशंकं ॥ राधिका ॥ २ ॥

राधानीसरवाश्राकृष्णनें वलीराधानीविरहावस्थाकेहेछे ॥ हेश्राकृष्णतेराधावलीत
 हारेविरहेकरीनें उदारबहुमूल्यनोमुक्ताफलनो हारजेसनऊपरपेहेसोछे तेघणोभा
 रकरीनेमानेछे ॥ केहवोछे राधा ॥ तहारेविरहेकरीनें घणोदबलीधरहाछे ॥ १ ॥ हेश्रा
 कृष्णवलीतेराधातहारेविरहे शरीरनेविषं ऊपनो जेपरितापतेहनें शमाववानेअर्थम
 लयागरनोअतिसूक्ष्मजेपंककईमधशीनें चोपयोछे तेपणविषसरखेलागेछे ॥ सा
 शंकबीहातोहोयजमविषयकीबीहसम ॥

॥ ३२ ॥

श्री कृष्णवलीतेराधाश्च सितपवनजे वायुते द्वे अनुपमपरिणाह अत्यंत विशाल
मदनजे कंदर्पतेहनोदहनजे अग्निते होय ज्यमत्यमसदाह अत्युच्चवेहे छे धरे छे ॥
श्यासो छासे करीने घणोदाह पामे छे ॥ ३ ॥ वलीते राधारुदन करती दशे दिशा वारे वा
रे जू ए छे ॥ जाणिये जल कए जे अश्रुपात तेहनं जाल समूह तेणें सहवर्तमान अने

श्च सितपवनमनुपमपरिणाहं ॥ मदनदहनमिव वहति सदाहं
राधिका ॥ ३ ॥ दिशि दिशि किरति सजल कए जालं ॥ नयन नलिन
मिव विगलित नालं ॥ राधिका ॥ ४ ॥ नयन विषय मपि किशलयत
त्यं ॥ कलयति विहित कृताशन कल्पं ॥ राधिका विरहे ॥ ५ ॥

विगलित नाल डाडो ये रहित एहवां जे नयन नलिन कमलना समूह ने किरति
मार्गनें विषे एहवां कमल पाथरती न होय ॥ ४ ॥ वलीते राधा किशलयत त्यजे
कमलना पुष्पना शय्या जे रचा छे ते द्वे जोइने कृताशन कल्प कृताशन जे अग्नि
ते ए रचा होय ज्यमत्यमदेखे छे ॥ पुष्प शय्या थामहादाह पामे छे ॥ ५ ॥ ॥

श्रीरामः

॥ ३२ ॥

हे श्रीकृष्णवलीतेराधा आपणो हाथें गालटे कानें बेगी छे ॥ अतं त घणो जो चक्रे छे ॥ त
हारे विरहे करी नें घणो दबली शरही छे ॥ ते के हवी लागे छे ॥ ज्यम द्वितीयानो सायं
काल ही ए एक कलानो अलोल स्थिर ज्यम चंद्रमा होय सम ॥ ६ ॥ हे श्रीकृष्णवलीतेरा
धा कंदर्प पाडी हरि हरि एह वो मंत्र जपे छे ॥ वारे वारे सकाम मनोरथ धरीने ॥ त हारे
विरहे राधा ये जीवानी आशा मेहला अने मरण नों अंगकार कयो ॥ ते माटे अंत

सजति न पाणि तले न कपोलं ॥ बाल शशिन मिव सायम लोलं ॥ रा
धिका ॥ ६ ॥ हरिरिति हरिरिति जपति सकामं ॥ विरह विहित मरणे
वनिकामं ॥ राधिका ॥ ७ ॥ श्रीजगदेव भणित मिति गीतं ॥ सुखयतु
केशव पदमुपनीतं ॥ राधिका विरहे ॥ ८ ॥

कालें जे हवी मति होय ते हवी ज
गति होय ॥ एह वृजाणी त हारूं स्मरण करे छे ॥ जाले छे जे कृष्ण ने ए जन्म नें विषे न
पामूं तो कृष्ण नूं स्मरण करतं मरूं जे आग ले जन्मे पामूं ॥ ९ ॥ एणी पेरें श्रीजय देवें कवी
श्रेणाय जे गीत श्रीकृष्ण नूं चरित्र ते श्री कृष्णार्पण की धूय कूं समस्त जन नें सुख रूप जावो ॥ ८

॥३२॥ हे पकः ॥ हे श्रीकृष्ण ते राधा जे ते अतनु कहियेन था शरीर जे हनें ॥ महादेव भस्म की धरे
छे ॥ एह वोजे कंदर्प ते दहनें जे ज्वर ते एरा धाने शरीरें घणो परिताप धाय छे ॥ रोमांच धाय
छे ॥ सीर्त्त रनें करे छे ॥ वली विलाप करे छे ॥ अर्थ शून्य बोले छे ॥ वली कांपे छे ॥ वली रा
निनें पा मे छे ॥ वली कर माइ जाय छे ॥ वली तहारे ध्यान करे छे ॥ वली अन्यथ इरही छे ॥

सारोमांचति सात्करोति विलपत्य कं पतेता म्पति ध्यायत्युद्रमूति प्र
मालति पतत्युधाति मूर्च्छित्यपि ॥ एतावत्पतनुत्तरे वरतनो जीवेन
किं ते रसात्स्व वैद्य प्रतिम प्रसादसि यदित्यक्तोऽन्यथा हसकः ॥१॥

वली अक्षी पक्षी भ्रमण करे छे ॥ वली नेत्र मांचे छे ॥ वली मूर्च्छनाने पा मे छे ॥ वली उ
गी ऊगी नें आववा करे छे ॥ वली मूर्च्छित थाय छे ॥ एक्षी अवस्था थइ छे ॥ एह वीवर
तनु जे माझा सखा ते दना ॥ तोय हे श्रीकृष्ण तहारा रस मात्रा था ते जीवेन हिशूं जीवे ॥ श्रीरामः
ज हे स्व वैद्य प्रतिम ॥ स्वर्ग ना जे वैद्य अश्विना कुमार ते समान छे ॥ हे वरतनो श्याम सुंदर ॥ ३२ ॥
रूप सन्न थाई तो जीवे ॥ अन्यथ बीजा हसक वैद्य नाडी परीक्षक ते एं न जीवे ॥ १ ॥

हे श्रीकृष्ण त्रैलोक्यसुंदर। जो तहें राधानें विमुक्त बाधान हिकरो। राधानो कामज्वर
नहि टालो तो। हे उपेंद्र इंद्रबंधु। वज्रयकापणदारुण भयंकर राधाने धनो। तेरा
धाके हवी छे। स्मरजे कंदर्प तेणें आतुर छे पाडी छे। अने तहें के हवा छे। देवतानां
वैद्यजे अश्विनी कुमार ते सरखा चतुर छे। वली राधा के हवी छे तहाराजे अंगक
रचरण दिक ते ज अमृती मात्र ते ए ज साध्य रूडी थाय। उपेंद्र वज्र एव तनूं नाम॥२॥

स्मरातुरां दैवत वैद्य हृदय त्वदंग संगामृतमात्रसाध्यां॥ विमुक्तबाधां
कुरुषेन राधामुपेंद्र वजादपि दारुणोऽसि॥२॥ कंदर्पज्वरसंज्वर
तुरतनो राश्वर्यमस्पाश्वर्ये तश्चंदनचंद्रमाकमलिनी चिंतासुसं
भ्राम्यति॥ किंतु कांतिवशेन शीतलतनुं त्वामेव मेकं प्रियं ध्यायती
रहसि स्थिता कथमसौ क्षीणरूपं प्राणिति॥३॥

हे श्रीकृष्ण ते राधानूं जे
चित ते चंदन चंद्रमा कमलिनी एटलां वानानां जे चिंता स्मरण करवूं त्या हो वि
रकाल लगे वडी वारुणान पामारे हे छे। एमो टें आश्चर्य। तेरा धाके हवी छे। आ
कुलका धू छे शरीर जे हनूं रूपमात्र पण कमजीवती हरो। त्या निधना पामे
छे। एकांत नें विषें तहारा स्मरण करता अतिकष्ट जीवें छे। एक तहने ज प्रिय जा

एनंत स्मर राधाने जीवें छे॥३॥

॥ ३४ ॥

हे श्री कृष्ण वली तेरा धायें पूर्वे पाप एमी चतारु एं पण तसरो विरह नो हो तो ख
मा तो ॥ तेरा धाह मणार साल आग्रह ते प्रापुष्पिताग्र शाखा मोरी डाली जो इ
ने कथं सितिक्य मजीवती हरी तसरो चिरकाल नो जे विरह ते ऐकरीने ॥ एव
त नू पुष्पिताग्र नाम छे ॥ ४ ॥ इति श्री टीका ने विषं चो यो सर्गं संपूर्णः ॥ ४ ॥ आग
ली अष्टपदी मो हे जे अर्थ छे ते श्लोक के करीने के हे ॥ राधानी सखी जे आवी छे ते

कृष्ण मपि विरहः पुरान से हे नयन निमालन खिन्न याय याते ॥ श्रु
सितिकथमसौ साल शाखां चिर विरहेण विलोक्य पुष्पिताग्रां ॥ ४ ॥

इति श्री गीतगोविंदे कवि श्री जयदेव कृतो स्निग्धमधुसूदनो नाम च
तुर्थः सर्गः ॥ ४ ॥ अहमिह निवसामि या हिराधाम नुनयमद्वचेनेन

चानयेथाः ॥ इति मधुरिपुण सखी नियुक्ता स्वयमिदमेतपुनर्जगादराधां ॥ १ ॥

हे सखि हूं आहां लता कुंज मो हे बेगो छूं तूं त्याहां राधा केने जाअनें मो हे वचनेक श्रीरामः
रीनें मना दीने ते डी आव ॥ हवें श्री कृष्ण सखी जे मो कलाते बीजी वर परी राधा क
नें आवीने पो ते श्री कृष्ण जे वचन कहाता ते के हेवा लागी ॥ १ ॥

॥ ३४ ॥

एगा तनों देशी वराडी राग छे। वाके दोरो। राग नं रूप के हे छे ॥ श्लोकः ॥ विनोद यं ता
दयितं सुकेश सुकंकण चामर चालनेन ॥ कर्षे दधाना सुरपुष्प गुच्छं वारांगनै
नां कथिता वरारी ॥ १ ॥ अर्थः ॥ भला कवी श्रोये वरारी रागिणी आहवा कहि छे। के
ही कहि छे। पोतानां भर्ता स्ने विनोद हर्ष उपजावे छे। वली रुद्रा के शके जे झा। वली
चमर नूं जे चाल वूडे लाववूँ ते एं करीनें ॥ रुद्रां कंकण हाथने विषये हे स्यां छे। वली

देशी वराडी रागे एगायते ॥ के दोरे एवा ॥ स्यति ताले ॥ बहुति मलय
समीरे मदन मुपनिधाय ॥ स्फुटति कुसुम निकरे विरहि हृदय दल
नाय ॥ श्रवण पद ॥ तव विरहे वनमाली सखि सोदति ॥ १ ॥ ॥ ॥

वली देवता नां वृक्ष नां पुष्प नां गुच्छे नं कानों विषे धर्यो छे। वली वारांगना श्रेष्ठ
स्त्री छे ॥ १ ॥ हे सखि ते वनमाली ताइ विरहे अत्यंत पीडाय छे। शाएं करीनें एक
ताइ विरह ते से हेवा तो नथी ॥ अने ते हवो मलय समीर जे वायु वेहे छे मदन जे का
म ते हने उपजावे छे। वली कुसुम जे पुष्प ते झा निकर समूह विकास पां मे छे ते जोइ
जोइ ने विरहियो नां हृदय दलाय छे फाटे छे ॥ १ ॥

॥ ३५ ॥ हेराधेवलीश्रीकृष्णताडेविरहेकरीनें मरणतुल्यथायहे । शिशिरशीतलहे
मयूषकिरणजेझाएहवोजेचंद्रमातेहनेभकाशेश्रीकृष्णनें वैश्वानरतुल्यथा
यहे । वलीतेश्रीकृष्णमदनजेकामतेहनाविशिरवजेबाणजेपडेहेतेएविला
पकरेहेवलीघणं विकलताप्रलापनेंकरेहेविकलथायहे ॥ २ ॥ हेराधावली

वहति शिशिरमयूषेमरणमनुकरोति ॥ पतति मदनविश्रिसे
विलपति विकलकरोति ॥ तव विरहे ॥ २ ॥ धनति मधुपसमूहेअ
वणमपि दधाति ॥ मनसि वलितविरहे निशिरुजमुपयाति ॥ तक् ॥ ३ ॥

तेश्रीकृष्णताडेविरहेकरीनें भ्रमरनासमूहनाधुनिजेशकृगुंजारवतेडेंसां
भलीनें काननें बुरेहे । भ्रमरनां जेगाततेविरहीनेंदुःसहथायहे । वलीताडेवि श्रीराम
रहेकरीनें रात्रिनें विषे घण्टुःखपोमेहे मननेविषे वलितविरहव्याप्तविरहे ॥ ३ ॥

श्री जयदेव कवीश्वरं बोलू जे एगो त ते विष्णु भक्त नां कंठ ने विषे सदा वसो । जे एगो
ते हारनें धिक्कार को धो छे । उपम मुक्ता फल ने हारे कंठ ने स म एगो ते हार पारे कंगान
मात्रे ज अधिक शोभे । वली डेग ते चतुराई प्रगट की धो छे । एगो त भएंचा तुर्थ विशेष
य ॥ ८ ॥ इति टीका ने विषे प्रबंध वीस मो ॥ २० ॥ हे सखिरा धे । प्रिय जे कृष्ण लजाना ध
रने विषे वाटजू छे । केहू छे कृष्ण चिंता ये आकुल छे । जे राधा आवा ने मज साहम्

श्री जयदेव भक्ति मधरी कृत द्वार मुदा सित वामं ॥ हरि विनिहित मन
साम धिति एतु कंठ तटी मजिराम ॥ मुग्धेम ॥ ८ ॥ इति श्री गीत गोविंदे क
वि श्री जयदेव कृतौ विंशति मः प्रबंधः ॥ २० ॥ सामां द्रुपति व द्रुपति स्म
र कथा प्रत्यंग मा लिंग नैः प्रीतिं यास्यति रस्य ते सखि स मा गत्येति चिंता क
लः ॥ हरं पश्यति वेपते पुलकयत्यनंदति स्विद्यति प्रत्युद्गच्छति मूर्च्छति प्रिय

जो रे । तथा स्मर कथा कामे प्रेश काई कर रे । तथा माझां अंग सारें राधा तमः पुं जे नि
आ लिंग न करता संतोष पाम रे । तथा क्रीडा कर रे । वली हरं पश्यति ता रे वि लंबे वे वेग
लेजू छे । शरीर ने विषे काम जनि त । भावे कां पे छे । तथा मो मां धित थाय छे । तथा आवा
जा एने हर्ष ने पामे छे । तथा सर्व गे प्रस्व दथाय छे । वली सो लो लेवाने आवे छे । पछम्
छीने पामे छे ॥ १ ॥

सखी नंदे रसमद ता दोष को पृथक् ॥ १ ॥

ते समय ते विषे मृगा की जे राधा ते की लज्जा पण लज्जा आई ने दर वेग ले ज
तीर ह ॥ कप कान ॥ प्रिय कृष्ण न आस्य मुर जो त ॥ राधा के हवी छे ॥ हस्य आ क
हते ते कपटे करी ने कनख जु आ लवार्ने मे षे आ छा द ॥ ते एं मिषे एक हाथ
ऊंचो करी एक सन कृष्ण ने देर का डी ने राधा ने समी प आ धी ॥ ते प्रिया स्य कृष्ण
ने मुख के हवी छे ॥ सर कंद प ते द्र बाण समा कृत सुभग सुदर छे ॥ मखी लता

भजं ता सखी तं कृत कपट कंड ति पिहित स्मितं माते गे हा हृदिर वहि
ताली परिजने ॥ प्रिया स्य पश्यंतीः सर रस समा कृत सुभगं मल ज्ञा
ल ज्ञा पिय गमद ति दूरं मृग दशः ॥ २ ॥ इति श्री गीत गी विदेक विश्वी
जय देव कृतो सा नंद हो मोदरो नाम एका दश मः प्रबंधः ॥ १ ॥ गत व
ते सखा तं दे मंद व पा नर ति नीर सर पर वरा कृत स्फी त स्मित स
पिता धर ॥ सर समल संद द्य राधा मुद्र न व प धे व प स व स म ये नि दिसा

गृह थी वो लावी ने बाहर नी कल्या पछी ॥ २ ॥ इति टीका ने विषे संगी ॥ १ ॥ आग ल्या
गीते नो प्रसंग श्लोक के हे छे ॥ कृष्ण राधाने के हे छे ॥ मृकरी ने राधाने से पू ए जो ई ने
राधा के हवी छे ॥ लवा प धे व नी राधा भणी वार वार जे छे ॥ तथा मुडी य ई जे ल ज्ञा
ते बाधो ज कंद प ते द्र वरा थै छे ॥ ते एं कंद प तां अजि प्री य संयुक्त जे हा स्य ते हस्य
एं १

ज कृष्ण धर नंदे जे हवी छे ॥ को थ के हवी छे ॥

॥ ६४ ॥ रागनंरूपकहूछे। कृष्णराधानेकेहेछे। आसमयनेविषेतद्रेअनुसरतोद्वंते
मद्रेअजमाहरोअंगीकारकरा। हेकामिनिराधेकिशालयजेपध्ववतेहनूराय
नशय्यातेऊपस्यताद्वं चरणकमलमूक। ताझापदपध्वसुपियावैरीथकेए
पध्ववनीशय्यापराभवपामो॥ १ ॥ हेराधेमाहेकरकमलेहायेकरीनेताझव
रणसंवाहनकरूपगचापे। हणएकचरणशय्याऊपरमूक। केहूछेताझव

रागरामकरी॥ एकतालीताले॥ किशालयशयनतलेकुरकामिनि
चरणनलिनविनिवेशं॥ तवपदपध्वववैरेपराभवमिदमनुनवतुसु
वेशं॥ २ ॥ ध्रुवपदं॥ हणमधुनाशयणमनुगतमनुसरराधिके॥ एक
रकमलेनकरोमिचरणमहमागमितासि विद्वं॥ हणमुपकुरुशय
नोपरिमाभिवनूपुरमनुगतेशूरं॥ हणम॥ ३ ॥ विदनसुधानिधिलित
ममृतमिवस्वयवचनमनुकूलं॥ विरहमिवापनयामिपयोधरोधक
रण॥ चालतांवागतांजेनूपुरतेद्वेमाझापेरेअंगीकारकरेछे। एमहमणमाहरोअ
गीकारकसोतम॥ तलीशूरनेपुरा॥ ४ ॥ हेराधेताझावदनरूपियाचंदमाथागेलि
तपडांअमृतसरखंअनुकलवचननी॥ चवनाकसुमीठावचनबोले॥ अनेहंता
झाहृदयथकूपटकूलसेननेहाकारहूछे॥ पकूकरहूछे॥ मणदादानीविरहछेतेसमे

नेपणपडोकरेछे॥ श्रीरामः

७ सङ्गिते सम्यक् ॥१॥

सखी के हे छे हे राधे ॥ एक छत के मन मा हे वडी वार नो वे हे तो अत्यंत थाको ॥ अने अ
त्यंत कंदर्प परिताप पूमाडो ॥ ते हवे ता डो बिबाधर बिंबजे पाकंटी डरु ते सरखो रा
तो सुधासंबाध अमृत पें अधिक ते के पातुं ड छति पावा करे छे ते पो ॥ एक छनां उत्सं
गने शो भाव ॥ कए एक उत्सं ऊपर बेरा नि भू है पजे कटाक्ष नो विस्तार ते डो लक्ष्य
रामा ने वैचा तो लीधो जे ए दास जन क छ ॥ ते वली ता झचर एक मलने सेवक ॥ एका

त्वां चित्तेन चिरं बहु प्रयमति श्रान्तो भृशं तापितः कंदर्पेण च पातुमि
च्छति सुधासंवाधं बिंबाधरं ॥ अस्यां कंतं दलं कुरुक्षुणमिह भूद्वेपल
दम्पी लवकाते दास इवोपसेवितपदो नो जेकुतः संभ्रमः ॥ १॥ इति श्री
गीतगोविंदे कविश्राजयदेवकृतौ तालरागाक्षवमुरारिमंगल
कसुमलतानामेकविंशतिमः प्रबंधः ॥ २॥ साससाधससानं
दगोविंदे लोललेखना ॥ सिंजानामंजुमंजीरं प्रविवेचनित्वेन ॥ १॥

कृष्ण पर एव डो क्रोध जिदा स नां दा से वे चा ता ली जिये ते ऊ पर तो सर्व दया करे ते माटे रीस
छांडा कृष्ण साथें की डाकरा ॥ १२ ॥ तिरी कान विषे प्रबंध एक बीस मो ॥ २९ ॥ आग ल्या गोत नो
पसंग श्लोक के हे छे तेरा धा काइ एक भय सहित आनंद युक्त कृष्ण ने विषे वंचल छे नेत्र जेह ना
वली मनोहर मंजोर बाछिया ते दे राई युक्त कुंज जेल ता गृह ते माहे प्रवेश करती हवी राधा स
भयरी भरी छे मनमा जाए छे ए कृष्ण अनेक कामिनी नें साथै विविध क्रीडा कांधी छे अने प्रनेक

कलाज्ञा लेखे तेहू एकलीअबला कामसंतोषाओते ऐंभ

॥ ६२ ॥

तेराधाकंदर्पपीडापहारीरुसनेदेखताहवा। तेरुसकेकाछे। राधानुमुखजोतांजप्रक
 दथयाछेअनेकविकारसंभस्वदरोमांछादिकनारचनाजेदें। जाणियेचंद्रमंडदेखतांचं
 चलहोआछेउत्तमतरंगजेदें। एकोसमुद्रजहोय। वलीएकरसअद्वितीयछेजेदें। तथा
 वडीवारनोविलासआडाइछेछे। तथाराधानेदेखतांधरंहरुनेपांमूछेमुखजेदें। तथा

वरासीरागे॥ यतिताले॥ राधावदनविलोकनविकसितविविधविकारवि
 भंगं॥ जलनिधिमिवविधुमंडलदर्शनतरलिततुंगतरंगं॥ **ध्रुवपदं**॥ ह
 रिमेकरसं॥ चिरमभिलषितविलासं॥ साददर्शीगुरुहर्षवशंवदवदनम
 नंगनिवासं॥ **ह**॥ हारममलतरतारमुरसिदधतंपरिरभ्यविहरं॥ स्फुटत
 रफेनकदंबकरंबितमिवयमुनाजलपूरं॥ हरिमेक॥ **२**॥ श्यामलेमृदुलक
 लेवरमंडलमधिगतगौरदुकूलं॥ नीलनलिनमिवपातपरागपटलभर

प्रबोधपांमोछेकंदर्पजेश्राकृष्णेन॥ **१**॥ वलीकेकाछेरुस। निर्मलमुक्ताफलनोहार
 अतिउज्ज्वलकरनेविषंघालोछे। तोजाणियेधरणेकेनेपुत्तउत्तमयमुनानाजलनूपूर
 होय॥ **२**॥ वलीकेहवाछेरुस। श्यामलेनेमृदुलकोमलकलेवरनारीरछेजेदें। तथा
 धिगतपेहसूं गोरपालंडुकूलवसुजेणें। जाणिये श्यामकमलपालेपरागेपुष्परसे
 वाद्यहोयमूलथकेतेजेहवूशोभतेहूं। श्रीकृष्णनृश्यामनारीरपाताबरेशोनेछे॥ **२**॥

श्रीरामः ॥

॥ ६२ ॥

हेराधेतेवनमालीश्री कृष्णविपिनजेवनतेजविनानकसुंछेघरकसुंछेत्या
हांवसेछे। अनेललितकहियेउरारअतिउत्तमएहवुंछेओपणपानूंघरमंदि
रतेछांझुंछे। विरहीजननेंघरसुखकारीनहोय। अनेवलीलुगतिधरणिश
यनेधरणीजेएथीतेजशयनशय्यातेद्रुविषेलोटेछे। अनेवलीनामपणताहू

वसतिविपिनवितानेत्यजतिललितधाम॥ लुगतिधरणिशय
नेबहुविलपतितवनाम॥ तवविरहे॥ ४॥ भणतिकविजयदेववि
रहविलसितेन॥ मनसिरभसिविनेवेहरिरुदयतुसुकुतेन॥ त
वविरहे॥ ५॥ ॥ अत्रगीतेपदत्रयाभावः पुस्तकत्रयेऽपि ॥ ॥

जघणूं विलपेछे। वारेवारेहेराधेहेराधेएहवोविलापकरेछे॥ ४॥ श्रीजयदेव
कवाश्वरं विरहीजननीअवस्थानेनेदेकरनेश्रीकृन्चरित्रकहूं। तेथकेओ
ताजननामननेविषेवसो। केहवूंछेतेमन॥ १॥ भसनांविनवजेशृंगारादिक
नांवाहुल्यतेणंसहवसेमानेछे॥ ५॥ एअष्टपदीनेविषेवणगीतनेंअभाव
छेत्रणपुस्तकनेविषे॥ एपंचपदीजछे॥

हरिश्रीनारायणउत्सवपाठे सदामननेविषेवसो॥ पं३

॥ ३६ ॥ हेराधेमाधवजेश्रीकृष्णते पुनः वलीफरीनें तेज निकुंजनें विषेलताना घरमांहे ते
 जरूपियूं प्रन्मथजेकं दर्पते हनं मोदूं तीर्थ तेलतारूपियातार्थनें विषे अनिशं निरंत
 रताडूं ध्यान करे छे ॥ अनें ताडूनामनो जे आलापते जमंत्रते मंत्रनी आवली ते द्वेज
 ये छे ॥ भूयः फरीनें ताडू कुचकुं नते डूं निर्भर कहिये गाडूं आलिंगन वांछे छे ॥ गाढा
 लिंगन रूपिया अमृतनें इछे छे ॥ पूर्वपेदे लाजेलता गृहनें विषे तजसाथे कामका

पूर्वयत्र समंतव्यारतिपतेरासादिताः सिद्धयस्तस्मिन्नेव निकुंजम
 न्मथमहातीर्थे पुनर्माधवः ॥ ध्यायैस्त्वामनिशं जपन्नपितवैवाला
 यमंत्रावली भूयस्त्वत्कुचकुं न निर्भरपरीरं जामृतं वांछति ॥ ३६ ॥
 ति श्रीगीतगोविंदे कविश्रीजयदेवकृतौ हरिसमुद्दयगुरुपदना
 मदशमः प्रबंधः ॥ १० ॥

आकी धाकूती त्या हां ॥ ज्यमबीजो कोई तापसतार्थनें वि
 षे बे शाने पोताना इष्टदेवताने ध्यान करे ॥ वली ते दोबीजमंत्रनामनो जप करे सायुज्य
 मुक्तिपामवाने ॥ सम आकृष्टताडूं गाढा लिंगन जे ते रूपिया अमृतनें पामवाने कृषाधि ॥ ३६ ॥
 रनां लक्षण करे छे ॥ ३६ ॥ ति श्रीगीतगोविंदे प्रबंधदशमोऽंशः ॥

श्रीरामः

श्रीकृष्णसखीमोकलीहस्तामनाववानेतेआवीनेराधानेकेहेछे। हेराधेतेवनमाली।
श्रीकृष्णयमुनानांतीरजेतदतेहनेविषेवसेछे। केहवूछेतवन। धीरसमीरमंदवायुए
युक्तछे। श्रीकृष्णकेहवाछे। गोपीपीनपयोधरकेठिणकुचतेहनामईनकरवा
नेविषेचलितचपलकेहेताचंचलचपलछेकरशालीहस्तकमलजेहना। तेहृदयेश
प्राणेशकनेअनुसरचाल। केहवाछे। श्रीकृष्ण। गतमभिसारेतेजेसंकेतकस्यंहतस्याहोवे

गुर्जरशिरागे॥ वाकेदोरे॥ प्रतिमगताले॥ रतिसुखसारेगतमभिसारेम
दनमनोहरवेशं। नकुरुनितंबिनिगमनविलंबनमनुसंतहृदयेशं॥ १
ध्रुवपदं॥ धीरसमीरयमुनातीरेवसतिवनेवनमाली॥ गोपीपीनप
योधरमईनचलितचपलकरशाली॥ २॥ नामसमेतंकृतसंकेतवाद्य
तेमृदुवेणु॥ बद्धमनुतेतनुतेतनुसंगतपवनचलितमपिरेणु॥ धीरसमीरे॥ २

गछे। तेसंकेतस्थानकेहवूछे। रतिसुखसारेकाडाकरवानेंसारसुंदरछे। श्रीकृष्ण
केहवाछे। मदनसरसोमनोहरवेशंछे। हेनितंबिनिराधेजवानेंविलंबनकर॥ १॥ हे
राधेतेश्रीकृष्णताइनामेयुक्तअनेसंकेतस्थानसूचकमंदमंदवेणुनेवजाइछे। तनुहे
राधेअनेवलीताइराशनेलीनेवायुएचलितरजेतेरजनेधणुदरीनेमानेछे। धन्यभा
गा

गुर्जरशिरागे॥ वाकेदोरे॥ प्रतिमगताले॥ रतिसुखसारेगतमभिसारेम

॥३९॥ हेराधे ते कृष्ण करे छे । पक्षी जे टुकु पर आचो वे से छे ते ए पत्र हा ले छे ते जा
 ले छे जे राधा आची ए हवूं जा ए निपु स्या राख्य रे छे । तथा च कित थइ नें ता ह
 रो मार्ग जू ए छे । के इवाटे आवे छे राधा । हेराधे ते वैरी ना पेरे ए मंजीर नै लोडी
 नें कुंज प्रसे चाल के हवूं छे मंजीर । मुखर के ह घ ए जोले छे । के लिजे का जते क
 रतां सलो लचंचल छे । ते कुंज के हवूं छे । तिमिर जे अंध कार ते द्रो जे पुंज समूह

पतति पतत्रे विचलति पत्रे शक्ति न वदु पयानं । रचयति शयनं स
 च कित नयनं पत्र पतित वपंथानं । धीर समीरे । ३ । मुखर मधीरं त्यज मं
 जीर रिपु मि व के लिस लोलं । चल सखि कुंजं सति मिर पुंजं शील यनी
 ल निचोलं । धीर समीरे । ४ । उर सि मुखरे सहित हारे घन इव तरल व
 लाके । तडि दिव पातेरति विपरीते राज सि मुकृत विपाके । धीर समीरे । ५ ।

ते एं सहित छे । नील निचोल कहिये श्याम वस्त्र पेहेर । ४ । हेराधे मुखरि जे कृष्ण ते द्रो श्रीरामः
 हृदय ऊपर आहवा शोभी श । क्य द्रोशं । विपरीतरति नें विषे । कृष्ण नें हृदय के हवूं
 छे । उपहित पेहसो मुक्ता वली नो दार जे एं तरल चंचल छे । तो जालिये घन मेघ नो छे । ३९
 ५ । के हवो छे मेघ तरल चंचल वला को बकनी अण जे द्रो विषे । राधे ते के हवी छे तडि
 नवी जलो सखी गोरे छे । क्य द्रोशं शोभी श । मुकृत जे पुण्य ते द्रो विपाके परिपाक ते समय । ५ ।

हेसरिवतुं श्री कृष्ण साधेंताहो जघन संयोग पमाउ केहवूं जघन आछादन वस्त्र
रहित ऊघाड़ूं करीने वली केहवूं जघन परिहृत गड्डे रशना कटि मेखला जेथे के
एहवे जघने केरीने श्री कृष्ण जघन आछादहा कप काहां किशलय शयनने वि
षे पुष्पनी शय्याने विषे पंकजनयने हेराधे पंकज कमल सरस केने जेहना वली के
हवूं जघन हर्षनं निधान आश्रय छे जेथी श्री कृष्ण ने हर्ष ऊपडे तो जाणिये निधि

विगलित वसनं परिहृत रशनं घटय जघन मपिधानं किशलय
शयने पंकजनयने निधि मिव हर्ष निधानं धीर समारेण पु हसिनि
मानी रजनी रिदानी मियम पियातिरामं कुरु मम वचनं सत्वर रचनं पू
रय मधुरि पुकामं धीर समारेण ॥ ७ ॥

होयशं जम निधिय के सर्व आनंद पा
में हेराधे तं कही शजे श्री कृष्ण ज आहां को न थी आवता हरि श्री कृष्ण ने अनिमा
न घए छे प्रभु ग कुर छे तड्डे छांडीने बीजे सी कने जाशे तो तें शं करीश अने हम
एंगर विछे तुड्डे जातां को डजा एरो नहि पछे एरा विपण जाय छे तं माह रू वचन
मांन ऊता वली था कृष्ण पामे चाल्य कृष्णों काम अमिला पपूर्ण कर्य ॥ ७ ॥

॥ ३७ ॥

हेबंधुजनचतुरलोको आकृष्यनें प्रणमते केहवाछे आकृष्य सुकृतजे जन्मांतरे की
 धांपुण्यतेणें पामिये वलीदययें युक्तछे जे जन आकृष्यना भक्ति करे ते ऊपर कृष्णदया
 घणी करे वली केहवाछे कृष्ण प्रमुदित हृदय युक्त छे हृदय जे हनुं श्रेय के आ जय देव
 कवीश्वर एह बंधु भणतेय के जय देव केहवाछे काधी छे हरि परमेश्वर नीसे वाजेणें ॥
 हेकांते ताहो प्रिय वल्लभ मदन जे कंदर्प तेणें कदन पाडित तेणें कांत छे दुःखा छे मुदः वा

आ जय देव कृत हरि सेवे भणति परम रमणीयं ॥ प्रमुदित हृदयं हरि म
 तिसदयं नमत मुकृत कमनीयं ॥ धीर समीरेण ॥ ५ ॥ विकिरति मुद्रः श्वा
 साना शापुरे मुद्ररीक्षते प्रविशति मुद्रः कुंजं गुंज न्मुद्र बद्धताम्यति ॥ ६ ॥
 चयति मुद्रः शय्यां पर्याकुलं मुद्ररीक्षते मदन कदन कांत कांते प्रियस्त

रं वारं आसने मूके छे ॥ पुर आगल सघली दिशा साह मंजु छे ववर्तते ॥ १ ॥
 वली वारं वार लता गृह कुंज माहे पे से छे ॥ वली वारं वार गुंजन बोलता थका घणं शानिने
 पामे छे ॥ वली वारं वार पुष्प नी शय्या रचे छे ॥ वली आकुल येनें वारे जए छे ॥ एह वीरे शिष्य
 एंश्वर्य थका करे छे ॥ ११ ॥

श्रीरामः

॥ ३८ ॥

१॥ हेराधेताहाजे एवाक्यतेहेसाधेतिगांशुसूर्यअस्तपाम्पे॥ एटलेतुनेंरुदन
 २॥ करतोदिवसअस्तनेंपाम्पे॥ अनेंगोविंदश्रीहृषनांमनोरथसाथेतमजेअंधका
 ३॥ रतेपांशुनातेंपाम्पे॥ श्रीहृषनेंमनोरथचणोथये॥ अनेकोकलेचकवाकपदीते
 ४॥ ज्यमरात्रिनेदियोगेंकरुणशहनेंकरेत्पममुद्गेमनावतावडीवारणे॥ नेमाटेहेमुधमूरु
 ५॥ एविलंबनकरहेतेविफलफास॥ एअनिसाररुणहृषकनेंजावानेवेलासुडीअ॥ २

धा

त्वद्वाक्येनसमंसमग्रमधुनातिगांशुस्तगतोगोविंदस्यमनोरन्त्रं
 समंप्राप्तंतमःसांडतां॥ कोकानांकरुणस्वनेनसदृशीदीर्घामदम्यथना
 तन्मृगधेविफलंविलंबनमसौरम्पेऽनिसाररुणः॥ २॥ आशेषादनुव
 वनादनूनखोलैरादनुस्वातेजप्रोद्धावूनसंभ्रमादनुरतारंभादनुप्रातयो
 ॥ अन्त्यगतयोर्भ्रमात्तिलितयोःसंभाषणेर्जानतोद्दपत्योरिहकोनकोन
 तमसिद्रीडाविमिश्रोत्सः॥ ३॥

हेराधेतमअंधकारनेंविषेस्वेछाकाइएककार्यविशेष
 नेअर्थेनाकल्यांजेदंपतिस्त्रीभर्तारतेभ्रमयुक्तेअकस्मातएकगंसल्यांतेहेकोणकोणला
 जायेयुक्तशृंगारादिकरसनहीआ॥ केहवास्त्रीभर्तारमर्त्यो॥ तंकाणएद्वेसंभाषणवा
 लवेकरीनेंपरस्परजणायापळेमल्यापूवेएकांतनेद्विषे॥ वांछिताप्राप्तिकरीनेसंतोषने
 पाम्पाछे॥ पेहेलूआलिंगनकीधूहेरसनेंअनुभवीनेपळेचुंबनमुखनेअनुभवतेपू
 रेनखरुतकीधातेशुखअनुभव॥ तेपूगेअंतःकरणमाउदयगमेएहवोवदपतेमोजेयो

१॥ हेराधेताहाजे एवाक्यतेहेसाधेतिगांशुसूर्यअस्तपाम्पे॥ एटलेतुनेंरुदन
 २॥ करतोदिवसअस्तनेंपाम्पे॥ अनेंगोविंदश्रीहृषनांमनोरथसाथेतमजेअंधका
 ३॥ रतेपांशुनातेंपाम्पे॥ श्रीहृषनेंमनोरथचणोथये॥ अनेकोकलेचकवाकपदीते
 ४॥ ज्यमरात्रिनेदियोगेंकरुणशहनेंकरेत्पममुद्गेमनावतावडीवारणे॥ नेमाटेहेमुधमूरु
 ५॥ एविलंबनकरहेतेविफलफास॥ एअनिसाररुणहृषकनेंजावानेवेलासुडीअ॥ २

॥ ३२ ॥

हृती केहे छे राधा प्रसें । हे सुमुखि राधे । ते सुभग सुंदर छे भाग्यजेदनं एह वाक्य सत के
 देखीनें कृतार्थ यया । केह बीछे तं । अंधकारें युक्त जे गार्ग तेह नें विषे सनय नय संहि
 तव कित बीहता दृष्टि नें मूकती छे । तथा सा सा । एह देखा ने एह स एह प्रत्ये मुद्रः क
 हि धे वारं वारं हिरदिनें हलुएं पगलां मूकती छे । एह प्रकारं कय मपि देव वशें ए
 कांत नें विषे पामरो । तूं कय मपामें अंग संध पा म्पा ता हां क सें तिता हां अंग केहवी । लां

सभय च कित विन्यस्यंती दृष्टौ ति मिरे पथि प्रतित रु मुद्रः स्थितामं
 रहः दंपद निवित त्वती ॥ कथ मपि प्राप्तामं गैर नंग तरंगिनि सु मुखिसु
 भगः पश्यन् सत्वा मुपैति कृतार्थतां ॥ ४ ॥ इति श्री गीतगोविंदक विश्व
 जय देव कृतो अत्रि सारिका वर्णनं साकांक्ष पुंडरीकाक्षो नाम पंचमः सर्गः ॥ ५ ॥

छे । अनंग जे कंदर्प ते एं कुरीनें स्वयं चंचल ॥ एह बीत के पामनें क स कृतार्थ यया
 ॥ ३ ॥ एमर्गनें आदि आशी वी दे छे ॥ इति श्री टीका ने विषे सर्ग ५ संपूर्ण ययो ॥ ५ ॥ ए श्रीरामः
 अष्टपदी नों गग गुण करी । केह बीछे ते ॥ स्नेह भातरो स्तटे कांत पथे निरी स अपा
 लयंती मुद्र पुष्प तले ॥ इत सतः प्रेरित दृष्टि राती रूपा मात नुर्गे शुक शहिष्टा ॥ १ ॥ अ ॥ ३२ ॥
 र्यः ॥ एह तले ऊ भो भती रनों मार्ग नू ए छे । वली पुष्प रची जे शय्या तेह नूर स ए करे छे
 वली अद्रा पद्म दृष्टि परे छे वली श्याम छे ॥ २ ॥

आगली अष्टपदी जे निरूपण करी ते श्लोके करीने केहे छे। हवे सखी राधाने कृष्णने विषे व
डी वारनी अनुरक्त कहिये मलवाने अत्ता तुरलता गृह कुंजने विषे बेगी जोइने कृष्णने राधा
नूंचरित्र अवस्था केहे। कृष्ण के हवा के। मनसि जे के दपिते एं करीने मंद आलस्य युक्त य
या छे। राधा के हवा के। कृष्ण के जवाने अशक्त असमर्थ यइने रही छे। १५ सखी कृष्णने केहे छे

अथ तांगंतु मशक्तांचिरमनुरक्तां लता गृहे दृष्ट्वा ॥ तच्चरितंगोविंदे मनसि
जमंदे सखी प्राह ॥ १ ॥ गुण करी रागे ॥ वा आसावरी ॥ रूप कताले ॥ पश्यति
दिशि दिशि रहसि भवंतं ॥ तदधरमधुरमधूनि पिबंतं ॥ ध्रुव पदं ॥ नाथ
हरे सीदति राधा वास गृहे ॥ २ ॥ तदभिसर ए रभसे नवलंती ॥ पतति पदनि
कियंति चलंती ॥ नाथ हरे ॥ ३ ॥

हे नाथ हे हरे भक्त जननां दुःखनां दालनार कृष्ण ते राधा
वास गृह लतानां कुंज मां दे सीदति घण्टुः खपामे छे। दिशि दिशि दशं दिशा तलने जए छे
एकांत लता गृहे विषे। के हवा देखे छे। तस्य रा अधर नमधुर अमृत पात ॥ १ ॥ वली के हवा छे
राधा ॥ तदभिसर तमकने आववाने हरे कुंजने पगलां के टला एक ही डीने पडे छे। ही डीने नथी
जो तस्यारी दया होय तो मली ॥ नहि ते स्वामी कोटि पगलां भरे तसे दुख भे छे। मां देखे वाट जए छे ॥ २ ॥

॥ ४० ॥

जो एहवी धइ छे ही जातं नथा तो जीवे छे कम तस्यारी जे का डा तेणें मलवा ना आशायें
 करीनें जीवे छे न हा तो न जीवे वली राधा के हवी छे आभूषण भारे करी पे हे राय न ही
 अनें आभूषण पाखे पण रे हे वाय न ही अमंगल मोटे विहित का धां छे विशद उज्वल के
 मलनां तं तुना आभूषण तथा किशलयन वां पलवनां वलय कंकण दिक जे राधाये
 वली ते राधा के हवी छे मंडन जे हार अंग दने पुर कटि मेखला मुद्रिका दिक नीलीला

विहित विशद विश किशलय वलया ॥ जावति परमिहत वरतिकल
 या ॥ नाथ हरे ॥ ३ ॥ मुहुर्बलोकित मंडन लीला ॥ मधुरि पुरह मिति
 भावन शीला ॥ नाथ हरे ॥ ४ ॥ खरित मुपेति न कथ म निसारं ॥ हरि रि
 तिवदति सखी मनुवारं ॥ नाथ हरे ॥ ५ ॥ शिष्य तिचुं वति जल धरक
 ल्यं ॥ हरि रूपगत मिति तिमिर मने ल्यं ॥ नाथ हरे ॥ ६ ॥

॥ वली तस्यारे धानें करीनें मधुरि पुरा कल हं छे एहवी भावना करे छे ॥ ४ ॥ वली तारे
 वारे सखीनें पूछे छे जे श्री कृष्ण ए संकेत स्थान कने विषे वेहे लाकं नथी आवता हजी
 एहवानि ए रशे थया छे परवेदना शे नथी जाणता अने धर्म शास्त्र क हं छे सीजननें दु
 स्तन दइ येत पण नथी जाणता ॥ ५ ॥ हे कृष्ण वली ते राधा अनल्य धरणा तिमिर जे अधका
 रते छे शिष्यति आलिंगन देखे चुं बन करे छे जाणे छे कृष्ण आवा का मेघना पटल जे सम

आशमः

॥ ४० ॥

हे नाथ रुस। वली तेरा धात ह्यारे विलंब करीने लज्जा छांडीने विलाप करे छे रडे छे। वास
न कस जा जेव सवानू की जानू स्याते लता गृहने विषे मृंगा रादिक वेपर चना करीने रहर
हीत ह्यारी वाट जूए छे॥७॥ वास के सज्जाने न हण॥ श्लोकः॥ या वासवेश्म सुसुकल्पि
ल ततल्य मध्ये तांबू पुष्पवसनैश्च समं सुसज्जं॥ कांतस्य संगमरसं सुसमीक्षमाणं सान्ना

नवति विलंबिनि विगलित लज्जा॥ विलपति रोदिति वासक
सज्जा॥ नाथ हरे॥७॥ श्रीजयदेव कवेरि दमुदितं॥ रसिकजनं
तनुतामतिमुदितं॥ नाथ हरे॥७॥ श्रीकृष्ण जयतु॥ ॥ ॥

यकानि गदिता खलु वाससज्जा॥१॥ अर्थः॥ जे स्त्री वाससंकेत स्थानने विषे शय्या
रचीने तांबूल पुष्प रुद्रावसुसकल संभोग सामग्री करीने भर्तारिनां संगमरसने इछ
ता वाट जूए ते वासक सज्जा कहिये॥५॥ श्रीजयदेव कवीश्वरे तेलुं जे गीत ते रसिकज
नने हर्ष ऊपजावो॥ एसां भलतां गाता समस्तरसिकजन अनंद पमि॥ ॥ ॥

४२

नवीरेखती एखे वडी वार को वाट जे रहे ॥२॥

एबो त्यागीत नों अर्थ श्लोके करी संयद करे छे । हे विधातः हे कितव कपटी धूर्त । ते मृगादी
 राधा मृग सरखं विशाल छे नेत्र जे हना । तित ह्यारुंध्यान घणु करे छे । कंदर्प नो चिंतये मा
 प्रयइ छे । स्मरजल धिजे मृगा रादिके रसरूपि यो ममुद ते दे विषे बडी छे । केहेतां सवर
 सनी जाण नार छे । वली के की छे । विपुल विस्तीर्ण पुल करे मांचना पोली पोकि ते युक्त छे
 वली स्फीत मोटी सात्कारे करी अंतर्गत उपना छे । जडि मा मूल्यता जे राधाने । काकु जे धनि

विपुल पुल कपाली स्फीत सात्कार संतज्ज नित जडि मका कुम्मा कुलं व्या
 दाहरंती । तव कितव विधातं मंद कंदर्प चिंता स्मरजल धिनि मृगा ध्यान लया
 मृगादी ॥ १ ॥ अंगे धा भरणं करोति बद्धः पत्रेऽपि संचारिणि प्राप्तं त्वं परि
 शंकते वितनुते शय्यां चिरं ध्यायति ॥ इत्याकल्पविकल्पतल्य रचना संक
 ल्पलीलाशतत्वा सत्तापि विना तया वरतनो नैषानिधाने ष्यति ॥ २ ॥

नाविकारने व्याकुल गद्गद कंठ बोले छे । हे वरतनो कृष्ण । वर सुंदर छे शरीर जे हनूं
 ते राधा तम पाषाण रात्रि नहिनी गमं । केहवी छे राधा । एण पेरे आकल्प विकल्प तल्य
 रचना संकल्पलीलाशत ते एवोपपद्ये । आकल्प कहिये आभरण विकल्प कहिये शंका त
 ल्य कहिये शय्या चरना संकल्प कहिये विचार एह वा अने कलीलाने विषे जघपि अवलंब
 न करीरही छे । अंगने विषे वारं वार आभरण करे छे । अने दृक् नो पाइहालता सो भलीने कृष्ण

आराम
 ४२
 आमा एहवी आचं को करे छे पुष्प शय्या चो घरे छे